दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

अग्रवाल महाविद्यालय, बल्लबगढ़ के "इतिहास विभाग" द्वारा 29–30 जनवरी, 2016 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन जिया जा रहा है, जिसका विषय है– "भारतीय राष्ट्रवाद के पुनर्गठन में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहचान." यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और उच्चतर शिक्षा महानिदेशालय, हरियाणा द्वारा संपोषित है और इसके संयोजक इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 जयपाल सिंह हैं. महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 कृष्णकान्त गुप्ता ने बताया कि वर्तमान को समझने और भविष्य को संवारने के लिए इतिहास की जानकारी अनिवार्य है. राष्ट्रीयता और देश के प्रति कर्त्तव्य–भावना आज की ज़रूरत है इसलिए यह विषय छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए प्रासंगिक है. इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से 100 के लगभग प्रतिभागी विषय से संबंधित पत्र प्रस्तुत करने के लिए पहुँचे. संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय राष्ट्रवाद की समस्याओं और चुनौतियों पर विचार कर राष्ट्रीयता की भावना को मज़बूत बनाने की राह खोजने का प्रयास करना है.

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रुप मे उपस्थित कॉलेज प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता ने सफल आयोजन के लिए आयोजन मंडल को बधाई दी और कहा कि राष्ट्रवाद को समझने के लिए इतिहास को जानना अनिवार्य है. डॉ0 जयपाल सिंह (संयोजक) ने संगोष्ठी की विषय वस्तु प्रस्तुत करते हुए बताया कि भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में अंग्रेजी शिक्षा और सामाजिक विचारकों की विशेष भूमिका रही. संगोष्ठी के बीज वक्ता के रुप मे उपस्थित जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, के इतिहास और संस्कृति विभाग के वरिष्ठ प्रो0 रिज़वान कैसर ने इस विषय को ज्वलंत बताया और कहा कि तमाम विविधताओं के बीच समता की स्थापना और सभी धर्म, भाषाओं और जातियों का सम्मान ही राष्ट्रवाद है. उन्होंने राष्ट्रवाद को एक आधुनिक और औद्योगीकृत प्रक्रिया बताया. उन्होंने यह भी कहा कि भारत में परिस्थितियाँ भिन्न हैं इसलिए राष्ट्रवाद के सिद्धान्त के पुनःनिर्माण की आवश्यकता है. उनका मानना था कि राष्ट्रवाद की अवधारणा से ही राष्ट्र का उद्भव होता है. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही कॉलेज की वरिष्ठ प्रवक्ता श्रीमती कमल टंडन ने अतिथियों और वक्ताओं का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के विषय को अति प्रासंगिक बताया. संगोष्ठी के आयोजक सचिव पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 राम चन्द्र ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया.

कॉलेज की त्रैमासिक समाचार पत्रिका का विमोचन किया गया.

संगोष्ठी के पहले दिन तीन तकनीकी सत्र आयोजित किये गये जिनमे आमंत्रित वक्ता के रुप में डॉ0 ज्योति अटवाल, डॉ0 क्वीनि सिंह, श्री एल. आर. शर्मा और डॉ0 युगराज सिंह ने प्रभावशाली ढ़ंग से राष्ट्रवाद से जुडी समस्याओं और चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की.

इन तीनों सत्रों में बीस प्रतिभागियों ने विषय से संबंधित पत्र प्रस्तुत किये.
उदघाटन सत्र का संचालन महाविद्यालय की हिन्दीविभागाध्यक्षा श्रीमती किरण आनन्द ने और तकनीकी सत्रों का संचालन डॉ0 गीता गुप्ता और डॉ0 सारिका ने किया.

महाविद्यालय के पुस्तकालय में दो दिन के लिए साहित्य की पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे संगोष्ठी में आने वाले अतिथि, छात्र और प्राध्यापक सभी लाभान्वित होगे.